[illegible]

पाठ्य सामग्री

Geography B.A. Part-II (Hon's)

Paper-III

Unit-I

भारत में मानसून उत्पत्ति एवं इसके प्रकारों का वर्णन करें

Climate of India (जलवायु) (1) Unit-1 ①

भारत की जलवायु आर्द्र ढंग की है, जिसे भारतीय जलवायु या मानसूनी जलवायु कहते हैं। ऐसी जलवायु के विशाल क्षेत्र भारत के नाम पर इसका नाम 'भारतीय' ठीक ही है। पर, मानसून क्यों कहा गया? मानसून अरबी भाषा के 'मौसम' शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है 'हवाओं का मौसमी उलट फेर'। मतलब यह है कि अलग-अलग ऋतुओं में अलग-अलग प्रकार के प्रचलित पवनों द्वारा यहां की जलवायु प्रभावित होती है।

जलवायु का प्रभाव पशु, पेड़-पौधे, कृषि वाणिज्य उद्योग एवं मानव की कार्य क्षमता पर पड़ता है। अर्थ व्यवस्था का कोई भी अंग इसके प्रभाव से अछूता नहीं है।

भारत जैसे विस्तृत देश (बल्कि उप महादेश) में जलवायु की एक-सी दशा मिलना कठिन है। उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत की जलवायु में थोड़ी विभिन्नता देखी जाती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां समुद्री पवन चलते हैं जो समुद्र से स्थल की ओर आते हैं इसके विपरीत, शीत ऋतु में यहां स्थलीय पवन चलते हैं, जो स्थल से समुद्र की ओर आते हैं। इस प्रकार सामान्यतः छः महीने तक समुद्री पवन और छः महीने स्थलीय पवन चलते हैं।

मौसमी परिवर्तन के साथ विपरीत दशाओं से पवन का चलना कहना ही मानसून है। मानसून शब्द 'वर्षा' का पर्यायवाची है। मानसून आने का मतलब वर्षा लाने वाली हवाओं का आना होता है।

भारतीय मानसून की उत्पत्ति:— भारतीय मानसून की उत्पत्ति का मूल कारण जल भाग और स्थल भाग का पारस्परिक संबंध है। ग्रीष्म ऋतु में जब उत्तरी-पश्चिमी भारत तथा पश्चिमी पाकिस्तान में अधिक तापमान के कारण वायु का कम दबाव होता है, तब निकटवर्ती अरब सागर पर वायु का अधिक दबाव होता है, जिससे सागर से स्थल की ओर वायु पवन के रूप में चलने लगती है दक्षिणी गोलार्द्ध के वाणिज्य पवन विषुवत रेखा तक 30 फुट से चलते हैं, पर इसके उत्तर दक्षिण महासागर में 30 फुट ऊंचाई से भारत के कम दबाव क्षेत्र की ओर चलने लगते हैं। हजारों किलोमीटर समुद्री यात्रा करके के बाद भारत भूमि पर पहुंचने के कारण ये जलवाष्प से भरे होते हैं। हिमालय की अवस्थिति उन्हें पार कर उत्तर की ओर (मध्य एशिया) नहीं जाने देती और भारत में ही वर्षा होने लगती है।

Scanned with CamScanner

भारतीय जलवायु का ठीक से अध्ययन करने के लिए
को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा जा सकता है—
(1) शुष्क मानसून काल
(2) आर्द्र (तर) मानसून काल

अब हम शुष्क मानसूनी जलवायु का वर्णन कर रहे हैं।—

इस मानसून का समय मध्य सितम्बर से मध्य जून तक माना जाता है। इसके दो उपविभाग किये जाते हैं:—
(क) शीत ऋतु (मध्य दिसम्बर से फरवरी तक)
(ख) ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक)

(क) शीत ऋतु :— इसमें सूर्य दक्षिणायन रहता है अर्थात दक्षिणी गोलार्द्ध में लम्बवत चमकता रहता है। इस समय समूचे भारत में तापमान गिर जाता है। सब से कम तापमान उत्तर पश्चिमी भाग में देखा जाता है तापमान 10°C से 12°C तक दक्षिण भारत में अपेक्षाकृत तापमान 25°C के आसपास रहता है। इस ऋतु में समताप रेखाएं पूर्व से पश्चिम की ओर प्रायः सीधी जाती हैं। दक्षिणी भाग में समुद्री प्रभाव के कारण दैनिक तापान्तर में विशेष अन्तर नहीं पड़ता पर उत्तरी भारत में यह तापान्तर अधिक बढ़ जाता है वहां रात में पाला भी पड़ता है

वर्षा की दृष्टि से यह ऋतु शुष्क रहती है आकाश साफ रहता है और वायु में नमी की कमी रहती है। हवाएं मन्द गति से बहती हैं। उत्तरी पश्चिमी भाग में हल्की वर्षा 2 से 5 Cm होती है। उत्तरी-पश्चिमी भारत में शीत लहरी चलने लगती है। जिससे कुछ दिनों तक देह गलानेवाली, हाड़ कंपानेवाली ठण्डक महसूस की जाती है। इस ऋतु में उत्तरी-पूर्वी पवन से थोड़ी बहुत वर्षा दक्षिणी भारत के अग्नेयी भाग में भी होती है। Map-1 पेज-26

(ख) ग्रीष्म ऋतु :— इसमें सूर्य उत्तरायण हो जाता है, अर्थात उत्तरी गोलार्द्ध में लम्बवत चमकने लगता है। इस समय सारे भारत में तापमान बढ़ जाता है। सबसे अधिक तापमान उत्तरी पश्चिमी भाग में 40°C के ऊपर हो जाता है। दक्षिणी भारत में अपेक्षाकृत कम तापमान रहता है क्योंकि यह भाग समुद्र से निकट और उष्ण कटिबंध के कारण। राजस्थान में जून में तापमान 49°C तक चला जाता है। उत्तर प्रदेश और बिहार में भी इन दिनों तापमान 38°C तक हो जाता है। इसके विपरित महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल में 27°C से -28°C तक ही रहता है।

उत्तरी-पश्चिमी भारत का उच्च दबाव क्षेत्र इस ऋतु में निम्न दबाव क्षेत्र में बदल जाता है पवन स्थल और समुद्र दोनों ओर चलने लगते हैं। स्थल की ओर से चलने वाले पवन शुष्क और बहुत गर्म होते हैं, जिसे 'लू' भी कहते हैं। 'लू' धूल भरी आंधी होती है जो पश्चिम से चलती है। Map-2 पेज-27

(2)

कुछ विद्वानों ने भारतीय जलवायु प्रदेशों को निम्न प्रकार से बाटा है:—

(1) उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन जलवायु प्रदेश
(2) उष्ण कटिबंधीय सवाना जलवायु
(3) उष्ण कटिबंधीय स्टेपी जलवायु
(4) उष्ण मरुस्थलीय जलवायु
(5) आर्द्र - उपोष्ण जलवायु
(6) पर्वतीय जलवायु

लेकिन कुछ विद्वानों ने भारतीय जलवायु को दो भागों में बाटा है — (1) शुष्क मानसून काल
(2) आर्द्र (तर) मानसून काल

अतः कई विद्वानों ने भारत को अनेक जलवायु वाला देश माना है इन्हीं विविधताओं को ध्यान में रखकर अनेक जलवायु वैज्ञानिकों ने भारत को विभिन्न जलवायु प्रदेशों में विभक्त करके का कार्य किया है इसमें तीन विद्वानों का कार्य विशेष महत्वपूर्ण रखता है।—

(i) थार्नथ्वेट का जलवायु वर्गीकरण — 1933 में
(ii) कोपेन का जलवायु वर्गीकरण — 1936 में
(iii) ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण — 1948 में

कोपेन के अनुसार जलवायु के प्रकार निम्न है—

(1) लघु शुष्क ऋतु का मानसून जलवायु
(2) उष्ण कटिबंधीय सवाना
(3) शुष्क ग्रीष्म ऋतु की मानसूनी जलवायु
(4) ~~शु~~ अर्द्ध शुष्क स्टेपी जलवायु
(5) उष्ण मरुस्थलीय जलवायु
(6) शुष्क ऋतु की मानसूनी जलवायु
(7) टुण्ड्रा जलवायु
(8) ध्रुवीय जलवायु

भारत की स्थिति भू मध्य रेखा के उत्तर में है और कर्क रेखा इसके मध्य से होकर गुजरती है। अतः भारत का दक्षिणी भाग उष्ण कटिबंध में आता है जो सदैव गर्म रहता है। भारत के उत्तरी भाग में तीन तरह का मौसम पाया जाता है। पूर्वी भाग में अधिक ताप तथा वर्षा पाई जाती है। उत्तरी भाग हिमालय के ठण्डे प्रदेश से प्रभावित रहता है। तथा पश्चिमी भाग में वर्षा की कमी के कारण गर्म तथा शुष्क रहता है।

वर्षा की दृष्टि से भारतीय भाग को चार भागों में बाँटा गया है:——

(1) अधिक वर्षा प्रदेश — जहाँ 500 से 1000 मि.मी. से अधिक वर्षा होती है जैसे — मासिनराम (मेघालय), चेरापुंजी

(2) मध्य वर्षा प्रदेश : जहाँ 500 से 1000 तक वर्षा होती है, बिहार, उड़ीसा, उ० प्रदेश, हिमाचल प्र०

(3) कम वर्षा वाले प्रदेश :- जहाँ 100 से 500 मि.मी. तक वर्षा होती है। राजस्थान को छोड़ समस्त भारत

(4) शुष्क प्रदेश :- जहाँ 100 मि.मी. से कम वर्षा होती है। राजस्थान

Scanned with CamScanner